Job

Chapter 32

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

צַדִּיק	הוּא	כִּי	אִיּוֹב	אֶת־	מֵעֲנוֹת	הָאֵלֶּה	הָאֲנָשִׁים	שְׁלֹשֶׁת	וַיִּשְׁבְּתוּ	1
धर्मी	वह	कि	अय्यूब	को	उत्तर-देने-से	ये	पुरुष	तीनों	और-चुप-हो-गए	
H6662	H1931		H0347	H0853		H0428	H0376	H7969		

פ	בְּעֵינָיו׃
—	आँखों-अपनी-में

फिर अय्यूब के तीनों मित्रों ने अय्यूब को उत्तर देने का प्रयत्न करना छोड़ दिया। क्योंकि अय्यूब निश्चय के साथ यह मानता था कि वह स्वयं सचमुच दोष रहित हैं।

אַפּוֹ	חָרָה	בְּאִיּוֹב	רָם	מִמִּשְׁפָּחַת	הַבּוּזִי	בַּרַכְאֵל	בֶּן־	אֱלִיהוּא	וְאַף	וַיִּחַר	2
क्रोध-उसका	भड़का	अय्यूब-पर	राम-के	कुल-से	बूज़ी	बारकेल-का	पुत्र	एलीहू-का	क्रोध	और-भड़का	
H0639	H2734	H0347	H7410	H4940	H0940	H1292		H0453	H0639	H2734	

מֵאֱלֹהִים׃	נַפְשׁוֹ	צַדְּקוֹ	עַל־
ईश्वर-से	स्वयं-को	धर्मी-ठहराने	पर
H0430	H5315	H6663	

वहाँ एलीहू नाम का एक व्यक्ति भी था। एलीहू बारकेल का पुत्र था। बारकेल बुज़ नाम के एक व्यक्ति के वंशज था। एलीहू राम के परिवार से था। एलीहू को अय्यूब पर बहुत क्रोध आया क्योंकि अय्यूब कह रहा था कि वह स्वयं नेक है और वह परमेश्वर पर दोष लगा रहा था।

וַיַּרְשִׁיעוּ	מַעֲנֶה	מָצְאוּ	לֹא־	אֲשֶׁר	עַל	אַפּוֹ	חָרָה	רֵעָיו׃	וּבִשְׁלֹשֶׁת	3
और-दोषी-ठहराया	उत्तर	पाया	नहीं	कि	पर	क्रोध-उसका	भड़का	मित्रों-उसके	और-तीनों-पर	
H7561	H4617	H4672	H3808			H0639	H2734	H7453	H7969	

אִיּוֹב׃	אֶת־
अय्यूब	को
H0347	H0853

एलीहू अय्यूब के तीनों मित्रों से भी नाराज़ था क्योंकि वे तीनों ही अय्यूब के प्रश्नों का युक्ति संगत उत्तर नहीं दे पाये थे और अय्यूब को ही दोषी बता रहे थे। इससे तो फिर ऐसा लगा कि जैसे परमेश्वर ही दोषी था।

לְיָמִים׃	מִמֶּנּוּ	הֵמָּה	זְקֵנִים־	כִּי	בִּדְבָרִים	אִיּוֹב	אֶת־	חִכָּה	וֶאֱלִיהוּא	4
दिनों-में	उससे	वे	बूढ़े	कि	वचनों-से	अय्यूब-के-लिए	को	इंतज़ार-करता-था	और-एलीहू	
H3117		H1992	H2205		H1697	H0347	H0853	H2442	H0453	

वहाँ जो लोग थे उनमें एलीहू सबसे छोटा था इसलिए वह तब तक बाट जोहता रहा जब तक हर कोई अपनी अपनी बात पूरी नहीं कर चुका। तब उसने सोचा कि अब वह बोलना शुरु कर सकता हैं।

פ	אַפּוֹ׃	וַיִּחַר	הָאֲנָשִׁים	שְׁלֹשֶׁת	בְּפִי	מַעֲנֶה	אֵין	כִּי	אֱלִיהוּא	וַיַּרְא	5
—	क्रोध-उसका	और-भड़का	पुरुषों-के	तीनों	मुंह-में	उत्तर	नहीं	कि	एलीहू-ने	और-देखा	
	H0639	H2734	H0376	H7969	H6310	H4617	H0369		H0453	H7200	

एलीहू ने जब यह देखा कि अय्यूब के तीनों मित्रों के पास कहने को और कुछ नहीं है तो उसे बहुत क्रोध आया।

יְשִׁישִׁים	וְאַתֶּם	לְיָמִים	אֲנִי	צָעִיר	וַיֹּאמַר	הַבּוּזִי	בָּרַכְאֵל	בֶּן־	אֱלִיהוּא	וַיַּעַן	6
बूढ़े	और-तुम	दिनों-में	हूँ-मैं	जवान	और-कहा	बूज़ी	बारकेल-का	पुत्र	एलीहू-ने	और-उत्तर-दिया	
H3453		H3117	H0589	H6810	H0559	H0940	H1292		H0453		

אֶתְכֶם׃	דֵּעִי	מֶחָוֹת	וָאִירָא	זָחַלְתִּי	כֵּן	עַל־
तुमको	ज्ञान-अपना	बताने-से	और-भयभीत-हुआ-मैं	डरा-मैं	इसलिए	पर
H0853	H1843	H2331	H3372			

सो एलीहू ने अपनी बात कहना शुरु किया। वह बोला: “मैं छोटा हूँ और तुम लोग मुझसे बड़े हो, मैं इसलिये तुमको वह बताने में डरता था जो मैं सोचता हूँ।

7

אָמַרְתִּי	יָמִים	יְדַבֵּרוּ	וְרֹב	שָׁנִים	יֹדִיעוּ	חָכְמָה׃
सोचा-मैंने	दिन	बोलेंगे	और-बहुत	वर्ष	सिखाएंगे	बुद्धि
H0559	H3117	H1696	H7230	H8141	H3045	H2451

मैंने मन में सोचा कि बड़े को पहले बोलना चाहिये, और जो आयु में बड़े है उनको अपने ज्ञान को बाँटना चाहिये।

8

אָכֵן	רוּחַ־	הִיא	בֶאֱנוֹשׁ	וְנִשְׁמַת	שַׁדַּי	תְּבִינֵם׃
लेकिन	आत्मा	वह	मनुष्य-में	और-सांस	सर्वशक्तिमान-की	समझाती-है-उन्हें
H0403	H7307	H1931	H0582	H5397	H7706	H0995

किन्तु व्यक्ति में परमेश्वर की आत्मा बुद्धि देती है और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर का प्राण व्यक्ति को ज्ञान देता है।

9

לֹא־	רַבִּים	יֶחְכָּמוּ	וּזְקֵנִים	יָבִינוּ	מִשְׁפָּט׃
नहीं	बहुत	बुद्धिमान-होते-हैं	और-बूढ़े	समझते-हैं	न्याय
H3808		H2449	H2205	H0995	H4941

आयु में बड़े व्यक्ति ही नहीं ज्ञानी होते है। क्या बस बड़ी उम्र के लोग ही यह जानते हैं कि उचित क्या है

10

לָכֵן	אָמַרְתִּי	שִׁמְעָה־	לִּי	אֲחַוֶּה	דֵעִי	אַף־	אָנִי׃
इसलिए	कहता-हूँ-मैं	सुनो	मुझे	बताऊँगा	ज्ञान-अपना	भी	मैं
	H0559	H8085		H2331	H1843	H0637	H0589

“सो इसलिये मैं एलीहू जो कुछ मैं जानता हूँ। तुम मेरी बात सुनों मैं तुम को बताता हूँ कि मैं क्या सोचता हूँ।

11

הֵן	הוֹחַלְתִּי	לְדִבְרֵיכֶם	אָזִין	עַד־	תְּבוּנֹתֵיכֶם	עַד־	תַּחְקְרוּן	מִלִּין׃
देखो	इंतज़ार-किया-मैंने	वचनों-तुम्हारे-के-लिए	कान-लगाया-मैंने	तक	समझ-तुम्हारी	तक	खोजते-थे-तुम	शब्द
H2005	H3176	H1697	H0238	H5704	H8394	H5704	H2713	H4405

जब तक तुम लोग बोलते रहोगे, मैंने धैर्य सेप्रतिक्षा की, मैंने तुम्हारे तर्क सुने जिनको तुमने व्यक्त किया था, जो तुमने चुन चुन कर अय्यूब से कहे।

12

וְעָדֵיכֶם	אֶתְבּוֹנָן	וְהִנֵּה	אֵין	לְאִיּוֹב	מוֹכִיחַ	עוֹנֶה	אֲמָרָיו	מִכֶּם׃
और-तुम्हारी-ओर	समझता-था-मैं	और-देखो	नहीं	अय्यूब-के-लिए	डांटनेवाला	उत्तर-देनेवाला	बातों-उसकी	तुममें-से
H5704	H0995	H2009	H0369	H0347	H3198		H0561	

जब तुम मार्मिक शब्दों से जतन कर रहे थे, अय्यूब को उत्तर देने का तो मैं ध्यान से सुनता रहा। किन्तु तुम तीनों ही यह प्रमाणित नहीं कर पाये कि अय्यूब बुरा है। तुममें से किसी ने भी अय्यूब के तर्कों का उत्तर नहीं दिया।

13

פֶּן־	תֹּאמְרוּ	מָצָאנוּ	חָכְמָה	אֵל	יִדְּפֶנּוּ	לֹא־	אִישׁ׃
कहीं	कहोगे-तुम	पाया-हमने	बुद्धि	ईश्वर	हराएगा-उसे	नहीं	मनुष्य
H6435	H0559	H4672	H2451	H0410	H5086	H3808	H0376

तुम तीनों ही लोगों को यही नहीं कहना चाहिये था कि तुमने ज्ञान को प्राप्त कर लिया है। लोग नहीं, परमेश्वर निश्चय ही अय्यूब के तर्कों का उत्तर देगा।

14

וְלֹא־	עָרַךְ	אֵלַי	מִלִּין	וּבְאִמְרֵיכֶם	לֹא	אֲשִׁיבֶנּוּ׃
और-नहीं	क्रम-किये	मेरी-ओर	शब्द	और-बातों-तुम्हारी-से	नहीं	उत्तर-दूँगा-मैं-उसे
H3808		H0413	H4405	H0561	H3808	H7725

किन्तु अय्यूब मेरे विरोध में नहीं बोल रहा था, इसलिये मैं उन तर्को का प्रयोग नहीं करुँगा जिसका प्रयोग तुम तीनों ने किया था।

15

חַתּוּ	לֹא־	עָנוּ	עוֹד	הֶעְתִּיקוּ	מֵהֶם	מִלִּים׃
हतप्रभ-हुए	नहीं	उत्तर-दिया	फिर	हट-गए	उनसे	शब्द
H2865	H3808		H5750	H6275	H1992	H4405

“अय्यूब, तेरे तीनो ही मित्र असमंजस में पड़ें हैं, उनके पास कुछ भी और कहने को नहीं हैं, उनके पास और अधिक उत्तर नहीं हैं।

16

וְהוֹחַלְתִּי	כִּי־	לֹא	יְדַבֵּרוּ	כִּי	עָמְדוּ	לֹא־	עָנוּ	עוֹד׃
और-इंतज़ार-किया-मैंने	कि	नहीं	बोलते-हैं	कि	खड़े-हैं	नहीं	उत्तर-दिया	फिर
H3176		H3808	H1696		H5975	H3808		H5750

ये तीनों लोग यहाँ चुप खड़े हैं और उनके पास उत्तर नहीं है। सो क्या अभी भी मुझको प्रतिक्षा करनी होगी

17

אַעֲנֶה	אַף־	אָנִי	חֶלְקִי	אֲחַוֶּה	דֵעִי	אַף־	אָנִי׃
उत्तर-दूँगा-मैं	भी	मैं	भाग-अपना	बताऊँगा	ज्ञान-अपना	भी	मैं
	H0637	H0589		H2331	H1843	H0637	H0589

> नहीं! मैं भी निज उत्तर दूँगा। मैं भी बताऊँगा तुम को कि मैं क्या सोचता हूँ।

18

כִּי	מָלֵתִי	מִלִּים	הֱצִיקַתְנִי	רוּחַ	בִּטְנִי׃
कि	भरा-हूँ-मैं	शब्दों-से	दबाती-है-मुझे	आत्मा	पेट-अपने-की
	H4390	H4405	H6693	H7307	H0990

> क्योंकि मेरे पास सहने को बहुत है मेरे भीतर जो आत्मा है, वह मुझको बोलने को विवश करती है।

19

הִנֵּה־	בִטְנִי	כְּיַיִן	לֹא־	יִפָּתֵחַ	כְּאֹבוֹת	חֲדָשִׁים	יִבָּקֵעַ׃
देखो	पेट-मेरा	दाखरस-की-तरह	नहीं	खुलती-है	मशकों-की-तरह	नई	फटेगी
H2009	H0990	H3196	H3808		H0178	H2319	H1234

> मैं अपने भीतर ऐसी दाखमधु सा हूँ, जो शीघ्र ही बाहर उफन जाने को है। मैं उस नयी दाखमधु मशक जैसा हूँ जो शीघ्र ही फटने को है।

20

אֲדַבְּרָה	וְיִרְוַח־	לִי	אֶפְתַּח	שְׂפָתַי	וְאֶעֱנֶה׃
बोलूँगा-मैं	और-चैन-मिलेगी	मुझे	खोलूँगा	होंठों-अपने	और-उत्तर-दूँगा
H1696	H7304			H8193	

> सो निश्चय ही मुझे बोलना चाहिये, तभी मुझे अच्छा लगेगा। अपना मुख मुझे खोलना चाहिये और मुझे अय्यूब की शिकायतों का उत्तर देना चाहिये।

21

אַל־	נָא	אֶשָּׂא	פְנֵי־	אִישׁ	וְאֶל־	אָדָם	לֹא	אֲכַנֶּה׃
नहीं	कृपया	उठाऊँगा-मैं	मुख	व्यक्ति-का	और-किसी	मनुष्य-को	नहीं	चापलूसी-करूँगा
H0408	H4994	H5375	H6440	H0376	H0413	H0120	H3808	H3655

> इस बहस में मैं किसी भी व्यक्ति का पक्ष नहीं लूँगा और मैं किसी का खुशामद नहीं करुँगा।

22

כִּי	לֹא	יָדַעְתִּי	אֲכַנֶּה	כִּמְעַט	יִשָּׂאֵנִי	עֹשֵׂנִי׃
कि	नहीं	जानता-हूँ-मैं	चापलूसी-करना	जल्दी-ही	उठा-लेगा-मुझे	बनानेवाला-मेरा
	H3808	H3045	H3655	H4592	H5375	

> मैं नहीं जानता हूँ कि कैसे किसी व्यक्ति की खुशामद की जाती है। यदि मैं किसी व्यक्ति की खुशामद करना जानता तो शीघ्र ही परमेश्वर मुझको दण्ड देता।